दृष्टि, वृत्ति और व्यवहार

मनुष्य के व्यवहार का उसकी दृष्टि और वृत्ति से गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य की जैसी दृष्टि हो वैसी उसकी वृत्ति बनती है और जैसी वृत्ति हो उसी के अनुसार ही उसका व्यवहार होता है। 'महात्मा' वही होता है जिसकी दृष्टि और वृत्ति महान् हो। जिसकी दृष्टि अवगुणों या दुर्गुणों पर जाती है, उसकी प्रायः घृणा की वृत्ति हो जाती है। इससे स्वयं उसकी अपनी वृत्ति परिवर्तन होने से वो दुःखी एवं अशान्त रहता है। वह दूसरों की कटु आलोचना करता है और लोगों में उसकी भरपूर निन्दा करता है। उसके गुण उसे देखने में नहीं आते और यदि आये तो भी उसे वो अवगुण की पुट दे देता है। इस प्रकार, अनेकों के प्रति दृष्टि विकृत होने से उसका अपना व्यवहार और अपना जीवन विकृत हो जाता है। जैसे दृष्टि का प्रभाव वृत्ति पर पड़ता है, वैसे ही वृत्ति भी दृष्टि को प्रभावित करती है। अगर मनुष्य की वृत्ति सतोगुणी है तो उसकी दृष्टि भी तदानुसार सतोगुणी होती है और उसका व्यवहार भी क्षमाशील, गुणग्राही, निर्दोष और कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है।

वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं

दृष्टि और वृत्ति के बारे में ऊपर हमने एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली क्रिया और प्रतिक्रिया का जो संकेत किया है और उसके परिणामस्वरुप मनुष्य के व्यवहार, जीवन और कर्मों पर तथा मानसिक शान्ति एवं आन्तरिक सुख के साथ उसका जो सम्बन्ध स्पष्ट किया है, वो शाश्वत सत्य है। वह संसार के सभी व्यक्तियों पर सदा लागू होता है। इसलिए इसके बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है। इस पर ध्यान न देने के परिणामस्वरुप दिनोंदिन मनुष्य का जीवन गिरावट की ओर जाता है। इस सत्यता पर धार्मिक ग्रंथों में इतना बल दिया गया है कि कुछ मनीषियों ने तो योग की व्याख्या करते हुए यह कह दिया है कि "योग चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम है"। यद्यपि सब वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ पुरुषार्थ नहीं है, न ही इसकी कोई आवश्यकता है। परन्तु लगता है कि ऐसी विचारधारा वाले सन्तों ने यह सोचा होगा कि हर एक वृत्ति में कुछ न कुछ दोष होता ही है। उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया होगा कि जाग्रत अथवा सुषुप्त अवस्था में ऐसा कोई काल होता ही नहीं जब मनुष्य की वृत्ति पूर्णतः निर्दोष हो, पवित्र हो एवं किसी न किसी विकार के सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभाव से रहित हो। प्रायः ही नहीं बल्कि लगभग सभी की मनोदशा बहुधा ऐसी रहती होगी। इसमें कुछ कम ज़्यादा सत्यता त ो है ।

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परन्तु यदि मनुष्य देह-दृष्टि से ऊँचा उठ जाये और सबको आत्मा के रुप में देखे और सब आत्माओं को परमात्मा की सन्तान के रुप में स्वीकार करे और "हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा, हम काहे को चिन्तन करें" – इन बातों की सूझ-बूझ रखे तो फिर वो विदेह स्थिति में रहेगा। यद्यपि उसके पाँव पृथ्वी पर होंगे परन्तु उसका मन परमधाम में होगा। वो 'पुरुष' से 'विराट पुरुष' हो जायेगा। उसकी स्थिति 'सहजयोगी' जैसी होगी। उसका मन भ्रमित, विचलित, उत्तेजित या मूढ़ अवस्था में नहीं जायेगा। वे सदा 'आनन्दकन्द' मनोस्थिति का रसास्वादन करता रहेगा। उसके मन में सबके प्रति सदा सद्भावना बनी रहेगी। सबके साथ उसकी निरन्तर आत्मीयता होगी। भगवान उसका साथी होगा। जब वो स्वयं साक्षी होगा, दृष्टा होगा और उसका चित्त ज्ञान से छलकता होगा तो वह सदा हर्षित होगा।

बदलना आवश्यक है

कोई पुरुषार्थी सोच सकता है कि ये जो ऊँची-ऊँची बातें हैं, ये उनकी पहुँच से बाहर हैं और अभी तो वे उससे काफ़ी दूर हैं। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श हैं, ये व्यवहारिक नहीं हैं। वे यह जानना चाहेंगे कि वे ऐसी गगनचुम्बी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुँचे, उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचड़े-कीचड़ से कैसे बचे रहें? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उनकी आँखें तो खुली रहनी हैं, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? उनकी वृत्ति अपने तथा दूसरों के दोषों से सदा विराम अवस्था में कैसे रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी हैं। इनके पीछे दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है। यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरुषार्थ करने की नीयत तो है। ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से उसे युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असम्भव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियाँ हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब भी यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूँछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्षभर कुत्ते की पूँछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा। उसने सोचा, एक वर्ष काफ़ी होता है, अब तो यह पूँछ सीधी हो गयी होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूँछ पर से नली नहीं हटायी। पर वर्षभर बाद जब हटायी, तब वो यह देखकर आश्चर्य चकित हुआ कि कुत्ते की पूँछ तो वैसी की वैसी टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह ही ख़ैर करे!' 'खुदा हाफिज़, उन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा ही नहीं है।' जो धर्मराज से ही नहीं डरते, वे धर्मात्मा लोगों से कहाँ डरेंगे... !!!

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में शामिल होने पर भारतीय नौसेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमडे,परम विशिष्ट सेवा मेडल,अति विशिष्ट सेवा मेडल,नौ सेना मेडल ने संस्थान की वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को भारतीय नौसेना का मोमेंटो देकर सम्मानित किया। इसके पश्चात् दादी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट किया। इस मौके पर कर्नल ब्र.कु. सती तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके उपस्थित रहे।

मुम्बई-घाटकोपर। युनाइटेड नेशन्स द्वारा आयोजित 'इंटर फेथ वीक' एवं 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के घाटकोपर सब ज़ोन द्वारा आयोजित 'वन गॉड-वन वर्ल्ड फैमिली' विषयक ऑनलाइन कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,एडिशनल डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़,सेंट्रल मुम्बई, फादर डॉ. डेविड बरा,स्पीरिचुअल प्रीचर, भदंत डॉ. राहुल बोधी,महाथेरो,भिकु संघ,युनाइटेड बुद्धिस्ट मिशन तथा नसुमुद्दीन कासिम, इमाम,मदीना मस्जिद दिल्ली ने सम्बोधित किया। इस दौरान 'वन गॉड-वन वर्ल्ड फैमिली' विषय पर आर्टिकल राइटिंग कॉम्पिटीशन एवं मेडिटेशन सेशन का भी आयोजन किया गया।

राजनांदगांव-छ.ग.। महाशिवरात्रि के अवसर पर 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा निर्माणाधीन ज्ञान मान सरोवर में 'शिव दर्शन आध्यात्मिक महोत्सव' में सांसद संतोष पाण्डे, महापौर श्रीमति हेमा देशमुख, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. मुरलीधर सोमानी, जिला भाजपा अध्यक्ष मधुसूदन यादव, पूर्व सांसद प्रदीप गांधी, पूर्व महापौर नरेश डाकलिया, छ.ग. राज्य वेयर हाउस कॉर्पोरेशन के पूर्व अध्यक्ष नीलू शर्मा, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष भरत वर्मा, नेता प्रतिपक्ष किशुन यदू, पार्षद शिव वर्मा, गगन आईच एवं कमलेश बंदे, समाजसेवी नरेन्द्र लोहिया, एल्डरमेन प्रतिमा बंजारे, मामराज अग्रवाल, राजेन्द्र जैन सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

पुणे-पिंपरी(महा.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'शिवदर्शन ज्ञान मेला' में 14 फुट महा शिवलिंग, बारह ज्योतिर्लिंग दर्शन, चैतन्य शंकर-पार्वती दर्शन, विशाल शंकर जी की मूर्ति, रक्तदान शिविर, मुफ्त आरोग्य चिकित्सा शिविर, बुक स्टॉल आदि का आयोजन हुआ। इस मेले का सभी कॉर्पोरेट सेक्टर के लोगों, पुलिस निरीक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, बिज़नेसमैन तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित बड़ी संख्या में शहर के लोगों ने लाभ उठाया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा दीदी सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

खेडब्रह्मा-गुजरात। महाशिवरात्रि के अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र पर बर्फ के अमरनाथ की झाँकी तथा राजयोग शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित हैं नगरपालिका प्रमुख सागर भाई, व्यापारी ओमप्रकाश भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।

उमरेड-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित शोभायात्रा में प्रदीप वरपे,नायब तहसीलदार, राजेश भंडे,नगरसेवक, सुमन ताई इटनकर,पूर्व नगराध्यक्ष तथा जी किड्स उमरेड प्रभारी, ब्र.कु. रेखा दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, संध्या ताई पारवे,समाजसेविका तथा पूर्व विधायक की धर्मपत्नी, ब्र.कु. अशोक भाई तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मुम्बई-डोम्बिवली। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलन के अवसर पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, सनी पुरोहित,डेंटिस्ट, बहरुख गावत,प्रिन्सीपल,गावदेवी विद्या मंदिर, मधुकर भोईर,ट्रस्टी,गांवदेवी विद्या मंदिर, रविन्द्र वसईकर,वाइस प्रिन्सीपल,गांवदेवी विद्या मंदिर, शिरीष देशपांडे,रोट्री क्लब अध्यक्ष,ग्रीन इंग्लिश स्कूल के अध्यक्ष, प्रेरणा कोल्हे, राजकुमार कोल्हे,प्रिन्सीपल,जन गण मन स्कूल एंड कॉलेज, केशव भोईर,ट्रस्टी,गांवदेवी स्कूल, नितिन गायकवाड़,प्रेस रिपोर्टर तथा अन्य।

बाल्को-कोरबा(छ.ग.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में राजकिशोर प्रसाद, महापौर,नगर पालिका कोरबा, कैलाश पवार, प्राचार्य, डी.पी.एस. बाल्को, गंगाराम भारद्वाज,पार्षद,वार्ड क्र.37, नर्मदा प्रसाद लहरे,पार्षद,वार्ड क्र.36, एस.मूर्ति एल्डरमेन, हितानन्द अग्रवाल,पार्षद, ब्र.कु. बिन्दु बहन, ब्र.कु. रुक्मिणी बहन, संतोष राठौर, पार्षद, कृपाराम साहू,पार्षद, दुश्यन्त शर्मा,अध्यक्ष, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी बाल्को तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

सुरेन्द्रनगर-गुज.। 86वीं त्रिमूर्ति शिवजयंति के पावन पर्व पर एक ही स्थान पर घूमते हुए 12 ज्योतिर्लिंगम, शिव शंकर की चैतन्य झाँकी, आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं 3डी विडियो अनुभूति कक्ष का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका प्रमुख विरेन्द्र आचार्य, ब्र.कु. हर्षा बहन तथा ब्र.कु. अरुणा बहन।